5

भाषा सीखने के संकेतक*

संकेतक के मायने (शिक्षाशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक पक्ष)

बच्चा जन्म से सीखना शुरू कर देता है। यह सीखना आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। लेकिन जब हम विद्यालय के वातावरण में कुछ निर्धारित पाठ्यक्रम के ज़रिए सीखने-सिखाने की बात करते हैं तो इस सीखने की प्रक्रिया को चिह्नित करना भी उतना ही ज़रूरी है, जितना कि सीखना-सिखाना। दरअसल ये वे संकेतक हो सकते हैं जिनके ज़रिए न केवल अध्यापक बल्कि स्कूल, प्रशासन, अभिभावक आदि भी सीखने की प्रक्रिया को समझ सकते हैं।

संकेतकों को समझने के लिए बच्चों के सामाजिक परिवेश, मनोवैज्ञानिक स्वरूप और उससे जुड़े इशारों और अभिव्यक्तियों को भी समझने की ज़रूरत होगी। यदि कोई बच्चा अपने सामाजिक परिवेश से अलग परिवेश का सामना करता है, तो शुरू-शुरू में उसकी अभिव्यक्तियाँ हमारी अपेक्षा के अनुकूल नहीं होंगी। सबसे पहले हमें दोनों के बीच की दूरी को मिटाने संबंधी गतिविधियाँ करनी होंगी, जैसे– दूसरे को जानने के मौके देने के लिए सामूहिक गतिविधियाँ करनी होंगी। इसी प्रकार अगर कोई बच्चा संकोची है, समझने और जानने के बाद भी अभिव्यक्त करने में हिचकिचाता है, तो उसे अकसर बोलने के मौके देने होंगे (जो वो खुद बोलना चाहे, बिना किसी टिप्पणी के, उसे अपनी भाषा में अपनी तरह से बोलने और लिखने के मौके)। इसी तरह से कुछ बच्चे इशारे से अपनी बात कहते हैं, तो कुछ सांकेतिक भाषा में लिखते-बोलते हैं, इसलिए हमें भाषा के संकेतकों को समझने के दौरान सुनने-बोलने, पढ़ने-लिखने जैसे कौशलों को व्यापक नज़रिए से समझना होगा और भाषायी कौशलों को यांत्रिकता के सीमित दायरों से बाहर निकालना होगा। तभी हम सही मायने में भाषिक विविधता (बच्चों की सांकेतिक भाषा, ब्रेल (Brail) आदि अपनी भाषा के साथ-साथ भाषा अभिव्यक्ति के अलग-अलग ढंग, इशारे, संकेत) को एक समावेशी कक्षा में स्थान दे पाएँगे। इस दृष्टि से संकेतक शिक्षाशास्त्रीय के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक और सामाजिक भी होंगे।

समावेशी कक्षा

समावेशी कक्षा का अर्थ है – सभी तरह के बच्चों को समाविष्ट करना यानी अंतरों की स्वीकृति, विविधता का उत्सव। समावेशन केवल भिन्न रूप से सक्षम बच्चों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका अर्थ किसी भी बच्चे का बहिष्कार न होना भी है।

---

* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली द्वारा विकसित

सीखने-सिखाने के तरीके और माहौल ऐसे हों कि सभी बच्चे यह महसूस करें कि वे उनका घर, उनका समुदाय, उनकी भाषा और संस्कृति महत्वपूर्ण हैं। उनकी विविध क्षमताओं को मान्यता मिले। यह माना जाए कि सभी बच्चों में सीखने की क्षमता है।

यह महत्वपूर्ण है कि कक्षा में सभी बच्चों के लिए समावेशी माहौल तैयार किया जाए। विशेषकर उनके लिए, जिनको हाशिए पर धकेले जाने का खतरा है। उदाहरण के लिए ये वे बच्चे भी हो सकते हैं जिनमें किसी प्रकार की कुछ असमर्थताएँ हैं या फिर वे बच्चे जो किसी भी सामाजिक, आर्थिक रूप से वंचित वर्ग के हैं। किसी भी बच्चे को असमर्थ आदि शब्दों से संबोधित करने से उनमें एक प्रकार की कुंठा और असहाय होने की भावना घर कर जाती है। इसे ध्यान में रखकर हमें विशेष रूप से सचेत होना होगा।

हमारी स्कूली पाठ्यचर्या में चुनौती वाले बच्चों के लिए पर्याप्त अवसर हों ताकि वे अपनी संभावनाओं का पूर्ण विकास कर सकें। इसलिए सीखने का ऐसा तरीका तथा माहौल बनाएँ जो सभी बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुकूल हो। बार-बार समझाने, सिखाने पर भी यदि कोई बच्ची सीख नहीं पाती है, तो उसकी ओर विशेष रूप से ध्यान दें। सीखने में कहीं पीछे रह जाने वाले ऐसे बच्चे देखने पर अन्य बच्चों से भिन्न नहीं लगते हैं इसलिए शिक्षक का सतर्क रहना ज़रूरी है, जैसे – यदि कोई बच्ची बार-बार सिखाने पर भी ‘त’ को ही लिखती है तो आप सजग हो जाएँ। इस तरह से कई बच्चे वर्णों को शुरुआत में उल्टा लिखते हैं लेकिन धीरे-धीरे सही लिखने लगते हैं। लेकिन यदि कोई बच्चा लंबे समय तक इस प्रकार वर्णों को उल्टा लिखता रहे तो हो सकता है कि यह ‘डिस्लेक्सिया’ का लक्षण हो। ऐसे बच्चों को सिखाने के लिए अलग-अलग तरीके इस्तेमाल करने होंगे, जैसे– इन्हें चित्रों के माध्यम से सिखाया जा सकता है।

इसी तरह अन्य प्रकार से शारीरिक रूप से चुनौती वाले बच्चों को उनकी विशेष आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए योजना बनाते हुए सीखने के अवसर दें। ये अवसर व्यक्तिगत रूप से, समूह में तथा जोड़े में बैठकर सीखने के हो सकते हैं। कक्षा में यदि कोई बच्ची ऐसी है जो देख नहीं सकती, तो उसे जोड़े में किसी ऐसे बच्चे के साथ बैठाएँ, जो उसे चित्र के बारे में बता सके। जोड़े में बैठाकर गतिविधि करवाते समय इस बात का ध्यान रखें कि जोड़ी के दोनों बच्चों को उस गतिविधि में समान रूप से भागीदारी का अवसर मिले, जैसे– एक बच्ची जो देख नहीं सकती, उसे दूसरी बच्ची चित्र के बारे में बता रही है तो स्पर्श या महसूस करके बताने वाली गतिविधि में दृष्टिबाधित बच्ची को बोलने के अवसर दें और बोलने या कुछ भी करने के ये अवसर सभी तरह के बच्चों को समान रूप से मिले और उन्हें गतिविधि करने के लिए पर्याप्त समय भी हों।

इस बात का ध्यान रखें कि सिखाने के तरीके सभी बच्चों के अनुभवों का पोषण करने वाले हों, चाहे वे किसी भी समाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वर्ग से आते हों। विभिन्न रूप से सक्षम बच्चे अवसर दिए जाने पर सीखने में प्रगति तो करते हैं, लेकिन अनेक बार इनकी प्रगति नज़र नहीं आती। इनकी प्रगति को समझने के लिए इनका रिकॉर्ड पोर्टफ़ोलियों में रखें। इस

समावेशी कक्षा में भाषा के संकेतक क्या हों? इसके लिए पहले हमें यह समझना होगा कि हमें भाषा की ज़रूरत क्यों है?

भाषा क्यों

'क्यों?' के जवाब में शायद हम यही कहेंगे कि अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के एक माध्यम के रूप में हम भाषा को पहचानते रहे हैं। इसीलिए हम सब यही परिभाषा पढ़ते हुए बड़े हुए कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। यानी भाषा के ज़रिए ही हम कुछ कहते और लिखते हैं और इसी के द्वारा कहे और लिखे को सुनते और पढ़ते हैं। इसीलिए भाषा के चार कौशलों की बात इस तरह से प्रमुख होती चली गई कि हम भूल ही गए कि कहने-सुनने वाले के पास दिमाग भी है। **बेर्टोल्ट ब्रेष्ट** के शब्दों में कहें तो– 'जनरल, आदमी कितना उपयोगी है, वह उड़ सकता है और मार सकता है। लेकिन उसमें एक नुक्स है – वह सोच सकता है।'

बच्चे जो कुछ देखते या सुनते हैं उसे अपनी दृष्टि/समझ से देखते-सुनते हैं और अपनी ही दृष्टि और समझ के साथ बोलते और लिखते हैं। यह दृष्टि/समझ एक परिवेश और समाज के भीतर ही बनती है, इसलिए परिवेश और समाज के बीच बन रही बच्चे की समझ को भाषा दे सकने में समर्थ बनाने की कोशिश होनी चाहिए। जबकि हो यह रहा है कि जब बच्चे स्कूल आते हैं तो घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच एक द्वंद्व शुरू हो जाता है। इस द्वंद्व से उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चे जो कि किशोर अवस्था में पहुँच रहे होते हैं, को भी जूझना पड़ता है। उनके पास अनेक सवाल हैं, अपने आस-पास के समाज और संसार के, जिसका जवाब वे ढूँढ रहे हैं।

अगर हमारी भाषा की कक्षा उनके सवालों और जवाबों को, उनकी अपनी भाषा दे सके तो यह इसकी सार्थकता होगी। इसलिए संकेतकों में दिए गए भाषा-कौशलों को एक साथ जोड़कर पढ़ने-पढ़ाने की दृष्टि भी विकसित करनी होगी। यह भी ध्यान रखना होगा कि भाषा-कौशलों को बेहतर बनाने के लिए बच्चे के परिवेश में उस भाषा की उपयुक्त सामग्री उपलब्ध हो। खासतौर से *द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वालों के लिए यह ज़रूरी होगा।* भाषा सीखने-सिखाने के माहौल और प्रक्रिया के अनुसार ही बच्चों में सीखने के संकेतकों को हम धीरे-धीरे विकसित होता देख पाएँगे।

सीखने के, संकेतकों के उपयोगकर्त्ताओं को इस बात का खास ध्यान रखना होगा कि ये संकेतक पाठ्यसामग्री तथा सतत् और समग्र आकलन एवं मूल्यांकन संबंधी प्रक्रिया की अगली कड़ी हैं। इसलिए इनका उपयोग करने से पहले इनके प्रारंभिक दस्तावेज़ों (पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यसामग्री) को देखना और समझना ज़रूरी होगा।

भाषा संबंधी संकेतकों को कक्षावार तीन स्तरों पर तैयार किया गया है। पहला स्तर पहली से तीसरी कक्षा, दूसरा स्तर चौथी और पाँचवीं कक्षा तथा तीसरा स्तर छठी से आठवीं कक्षा तक के, बच्चों के भाषा सीखने संबंधी संकेतकों की चर्चा करता है।

संकेतकों के बारे में चर्चा करने से पहले आइए, भाषा-कौशलों के बारे में कुछ ज़रूरी बातें समझ लें। मोटे तौर पर भाषा संबंधी कौशल हैं – सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। यहाँ यह भी समझ लेना होगा कि भाषा के ये कौशल परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए

हैं तथा समझ कर सुनने-बोलने या पढ़ने-लिखने की गतिविधियाँ होंगी ना कि भाषा के ऊपरी ढ़ाँचे की बात।

सुनना-बोलना

सुनने और बोलने के कौशल में दक्षता से आमतौर पर हम चाहते रहे हैं कि बच्चे पढ़े और सुने को ज्यों का त्यों ही बोल दें। सुनने और बोलने में 'समझ' की भूमिका को हम भूलते चले गए। जबकि किसी बात पर प्रतिक्रिया न करने वाले (न सुनने वाले के अर्थ में) को हम यही कहते हैं – 'अरे भई तुम सुन ही नहीं रहे हो' ज़ाहिर है कि यहाँ 'समझ' के बिना सुनने का और बोलने का कोई मतलब नहीं लिया जा रहा है। पर हम पढ़ने-पढ़ाने की दुनिया में सुनने और बोलने के कौशल में 'समझ' की इस अहम भूमिका को भूलते चले गए। यह समझ ही है जो सुनने और बोलने को सार्थकता प्रदान करती है।

पढ़ना

भाषा-संकेतकों संबंधी आगे की चर्चा में पढ़ने को लेकर जो शिक्षण बिंदु दिए गए हैं, वे पढ़ने की स्थापित संस्कृति, जो पढ़ने को एक यांत्रिक कौशल के रूप में विकसित करने का समर्थन करती है, के विपरीत दिशा में जाते हैं। 'पढ़ना' मात्र किताबी कौशल न होकर एक तहज़ीब और तरकीब है। पढ़ना, पढ़कर समझने और उस पर प्रतिक्रिया करने की एक प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि पढ़ना बुनियादी तौर से एक अर्थवान गतिविधि है। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि मुद्रित अथवा लिखित सामग्री से कुछ संदर्भों व अनुमान के आधार पर अर्थ पकड़ने की कोशिश 'पढ़ना' है।

लिखना

लिखना एक सार्थक गतिविधि तभी बन पाएगी जब बच्चों को अपनी भाषा, अपनी कल्पना, अपनी दृष्टि से लिखने की आज़ादी मिले। बच्चों को ऐसे अवसर मिलें कि वे अपनी भाषा और शैली विकसित कर सकें न कि ब्लैकबोर्ड पर लिखे या किताबों की इबादत या फिर अध्यापक के लिखे हुए की नकल करते रहें।

भाषा अर्जित करने और सीखने की प्रक्रिया सतत् रूप से जारी रहती है, बशर्ते, बच्चों को एक बेहतर भाषिक परिवेश उपलब्ध हो। भाषा अर्जित करने की इस प्रक्रिया में बच्चे अनेक तरह के अनुभवों से समृद्ध होते चलते हैं। सामाजिक अनुभवों के साथ-साथ वे विविध-भाषा प्रयोगों से भी परिचित होते जाते हैं और इन सबके परिणाम स्वरूप वे भाषा सीखने की किसी भी औपचारिक प्रक्रिया में दाखिल होने से पहले ही उनमें अपनी बात को कहने-सुनने की क्षमता होती है। बच्चों की भाषा सीखने संबंधी क्षमताओं के बारे में हमारी समझ सीखने-सिखाने के तरीकों को प्रभावित करती है। अत: यह ज़रूरी होगा कि हम बच्चों की इन क्षमताओं, भाषा सीखने-सिखाने संबंधी अपेक्षाओं और कुछ बेहद महत्वपूर्ण बिंदुओं को भी समझ लें। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि भाषा संबंधी संकेतकों को कक्षावार तीन स्तरों पर दिया गया है। इन तीन स्तरों पर भाषा सीखने-सिखाने के परिदृश्य को भी समझ लेना ज़रूरी होगा। आगे की चर्चा इसी परिदृश्य को विस्तार देती है –

कक्षा तीन तक

बच्चे, घर-परिवार एवं परिवेश से प्राप्त बोलचाल की भाषा के अनुभवों को लेकर ही विद्यालय आते

हैं। पहली बार स्कूल में आने वाला बच्चा शब्दों के अर्थ और उनके प्रभाव से परिचित होता है। लिपिबद्ध चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ बच्चों के लिए अमूर्त हैं, इसलिए पढ़ने का प्रारंभ अर्थ से ही हो और किसी उद्देश्य के लिए हो। यह उद्देश्य कहानी सुनकर, पढ़कर आनंद लेने के रूप में भी हो सकता है। धीरे-धीरे बच्चों में, भाषा की लिपि से परिचित होकर अपने परिवेश में उपलब्ध लिखित भाषा को भी पढ़ने-समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। भाषा-शिक्षण की इस प्रक्रिया के मूल में बच्चों के बारे में यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह निर्माण किसी के सिखाए जाने या ज़ोर-ज़बरदस्ती से नहीं बल्कि बच्चों के स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से होता है। इसलिए बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना ज़रूरी है, जहाँ वे बिना रोक-टोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोज-बीन कर सकें।

यही अवधारणा बच्चों के भाषिक कौशलों पर भी लागू होती है। स्कूल में आने पर बच्चे प्राय: स्वयं को बेझिझक अभिव्यक्त करने में असमर्थ पाते हैं, क्योंकि जिस भाषा में वे सहज रूप से अपनी राय, अनुभव, भावनाएँ आदि व्यक्त करना चाहते हैं, वह स्कूल में प्राय: स्वीकृत नहीं होती। भाषा-शिक्षण को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है। कक्षा में बच्चे अलग-अलग भाषायी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं। कक्षा में इनकी भाषाओं का स्वागत किया जाना चाहिए और उनमें बच्चों से सहज अभिव्यक्ति क्षमता का उपयोग करते हुए हिंदी पढ़ाई जानी चाहिए। शिक्षक बहुभाषिकता की महत्ता को समझकर कक्षा में उसका उपयोग करें, तभी वह बच्चों को अपने परिवेश में स्थित सांस्कृतिक और भाषिक विविधता के प्रति संवेदनशील बना सकता है। आज बहुभाषिकता को बच्चे के व्यक्तित्व विकास के लिए संसाधन के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है।

कक्षा पाँच तक

चौथी कक्षा तक आते-आते बच्चे स्कूल से परिचित हो जाते हैं और वहाँ के वातावरण में घुलमिल जाते हैं। स्कूल का वातावरण और दूसरे बच्चों का साथ उन्हें हिंदी भाषा में निहित स्थानीय, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विविधताओं से परिचित कराता है। इसके अतिरिक्त वे अन्य भाषाओं के प्रति संवेदनशील भी हो जाते हैं। इस स्तर पर बच्चे की भाषा से जुड़े कौशलों की प्रकृति में गुणात्मक बदलाव आएगा। उनमें स्वतंत्र रूप से पढ़ने की आदत विकसित होगी। पढ़ी हुई सामग्री से वे संज्ञानात्मक और भावनात्मक स्तर पर जुड़ेंगे और उसके बारे में स्वतंत्र और मौलिक विचार व्यक्त कर सकेंगे। यहाँ तक आते-आते लिखना एक प्रक्रिया के रूप में प्रारंभ हो जाता है और वह अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से लिखने लगते हैं।

कक्षा आठ तक

छठी से आठवीं कक्षा के बच्चे किशोरावस्था में कदम रख रहे होते हैं। यह दौर मन, मानस और शारीरिक परिवर्तन की दृष्टि से संवेदनशील होता है। इस नए संधि काल में स्कूल, कक्षा और शिक्षक की सकारात्मक भूमिका छात्र-छात्राओं की ऊर्जा और जिज्ञासा को सार्थक स्वस्थ दिशा दे सकती है, ताकि मननशील और संवेदनशील व्यक्ति के रूप में उनका विकास हो

सके। इसके लिए ज़रूरी है कि वे कक्षा के साथ-साथ भावनात्मक और बौद्धिक जुड़ाव महसूस कर सकें।

सौंदर्यबोध, साहित्यबोध और सामाजिक-राजनैतिक बोध के विकास की दृष्टि से स्कूली जीवन का यह चरण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस चरण में कई किस्म के बोध और दृष्टियों के अंकुर फूटते हैं। चाहे भाषायी सौंदर्य हो या परिवेशगत, कोई चीज़ सुंदर है तो क्यों है? यदि कोई वस्तु, रचना, फ़िल्म आदि अच्छी है तो वे कौन से बिंदु हैं, जो उसे अच्छा बनाते हैं, उनके बारे में स्पष्ट सोच होना बहुत ज़रूरी है।

प्रारंभिक कक्षाओं में समझकर पढ़ना, सीख लेने के बाद अब छात्र-छात्राएँ पढ़ते समय किसी रचना से भावात्मक रूप से जुड़ भी सकेंगे और कोई किताब या रचना सामने आने पर उसे उठाकर पलटने और पढ़ने की उत्सुकता उनमें स्वत: होगी। समाचार पत्र के विभिन्न पन्नों पर क्या छपता है, इस बात की जानकारी उन्हें हो। समाचार पत्र में छपी किसी खबर, लेख या कही गई किसी बात का निहितार्थ क्या है? छात्र-छात्राएँ उसमें झलकने वाली सोच, पूर्वाग्रह और सरोकार आदि को पहचान पाएँ। कुल मिलाकर प्रयास यह होना चाहिए कि इस चरण के पूरा होने तक छात्र-छात्राएँ किसी भाषा, व्यक्ति, वस्तु, स्थान, रचना आदि का विश्लेषण करने, उसकी व्याख्या करने और उस व्याख्या को आत्मविश्वास व स्पष्टता के साथ अभिव्यक्त करने के अभ्यस्त होने लगें।

सीखने संबंधी संकेतक सीखने-सिखाने से जुड़ी अपेक्षाओं यानी पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं की ओर ध्यान करते हैं। भाषा सीखने के संकेतकों को गहनता से समझने और उसके अनुरूप अपनी कक्षा की प्रक्रियाओं को निर्धारित करने के लिए यह ज़रूरी है कि विभिन्न कक्षाओं में भाषा-पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं को जान-समझ लिया जाए। पाठ्यक्रम संबंधी इन अपेक्षाओं को पूरे देश के बच्चों को ध्यान में रख कर (प्रथम भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले और द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले दोनों) तैयार किया गया है।

भाषा हिंदी (कक्षा एक से तीन तक) पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ

सुनना और बोलना

- दूसरों की बातों/आवाज़ों को ध्यान से सुनना।
- अपनी बात कहने की कोशिश करना (बोलकर/इशारों/साइन लैंग्वेज/चित्र बनाकर)।
- दूसरों की बात समझकर अपने शब्दों में कहने की कोशिश करना।
- छोटी कहानी, कविता आदि को हावभाव के साथ सुनना।

पढ़ना और लिखना

- चित्र देखकर अनुमान लगाते हुए पढ़ना।
- लिखित और मुद्रित सामग्री को पढ़ना।
- पढ़ी गई बातों को समझकर अपने शब्दों में कहने और लिखने की कोशिश करना।
- विभिन्न स्रोतों (रीडिंग कॉर्नर, पोस्टर, दवाइयों के रैपर, होडिंग, बाल पत्रिकाएँ, साइन लैंग्वेज) से अपनी पसंद की सामग्री ढूँढ़कर पढ़ना।
- अपनी बात को लिखकर कहना।
- अपनी कल्पना से छोटी कहानी, कविता आदि लिखने की कोशिश करना।

परिवेशीय सजगता

आसपास की प्रकृति (पेड़-पौधे, मौसम, घरेलू पशु-पक्षी आदि) को देखना और अपनी राय बनाना।

घर की भाषा और हिंदी के बीच संबंध बनाने की कोशिश करना।

सीखने के तरीके तथा माहौल

सभी बच्चों के समावेश (inclusion) को ध्यान में रखकर

- अपनी भाषा में बातचीत करने की आज़ादी और अवसर हों, जैसे-समूह में एक-दूसरे के बारे में बातें कहना और सुनना।
- अपनी बात कहने (भाषिक और सांकेतिक माध्यम से) के लिए प्रोत्साहित हों।
- अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों, जैसे-'खाना' शब्द से मिलते-जुलते दूसरे लयात्मक शब्द।
- छोटी कहानियाँ, कविताएँ अथवा/बाल साहित्य, स्तरानुसार सामग्री, साइनबोर्ड, होर्डिंग, अखबारों की कतरनें उनके आस-पास के परिवेश में उपलब्ध हों और उन पर चर्चा करने के मौके हों।
- सक्रिय होकर काम करने के लिए स्तरानुसार ऑडियो-वीडियो सामग्री के उपयोग के अवसर हों।
- हिंदी में सुनाई गई छोटी कविता, कहानी आदि पर अपनी भाषा में सवाल पूछने के अवसर हों।
- हिंदी में सुनी गई छोटी कविता, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में सुनाने के अवसर हों।
- विभिन्न प्रकार की सामग्री (रीडिंग कॉर्नर की किताबें, पोस्टर, दवाइयों के रैपर, होडिंग, बाल पत्रिकाएँ, साइन लैंग्वेज़) पढ़ने के अवसर हों।
- स्तरानुसार रोचक बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, अखबार, ऑडियो-वीडियो सामग्री उपलब्ध हो।
- पढ़ी गई रचनाओं पर अपनी भाषा में बात करने, अपनी राय देने, सवाल करने की आज़ादी हो।
- अपना परिवार, स्कूल, मोहल्ला, खेल का मैदान, गाँव का चौपाल जैसे विषयों तथा अपने अनुभवों पर लिखकर, एक-दूसरे से बाँटने के अवसर हों।
- अपनी बात को अपने अंदाज़ में लिखकर अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता हो।
- एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, उसमें अपनी बात जोड़ने,बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से बार-बार लिखने के अवसर हों।
- बच्चों द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने की प्रवृति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाए।
- अपनी बात को सृजनात्मक तरीके से अभिव्यक्त करने की आज़ादी हो।
- आस-आस होने वाली गतिविधियों/घटने वाली घटनाओं (जैसे-मेरे घर की छत से सूरज क्यों नहीं दिखता?, सामने के पेड़ पर बैठने वाली चिड़िया कहाँ चली गई?) को लेकर सवाल करने के अवसर पर बच्चों से बातचीत या चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।
- कक्षा में अपने साथियों की बोलियों पर गौर करने के अवसर, जैसे-आम, रोटी, तोता आदि शब्दों को अपनी-अपनी बोली में कहे जाने के

अवसर हों। या गतिविधि शब्दों की लेन-देन/की गतिविधि के रूप में की जा सकती है।

- पाठ्य-पुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील मुद्दों को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।

सीखने के संकेतक सभी बच्चों के समावेश (inclusion) को ध्यान में रखकर प्रतिक्रियाएँ, और सांकेतिक-दोनों हो सकती हैं।

कक्षा एक

सुनना और बोलना

- अपने आसपास की आवाज़ों (लोगों, बस, रेल, बैलगाड़ी, पशु-पक्षी आदि) को पहचानती/पहचानता है।
- कही जा रही बात को ध्यान से सुनने की कोशिश करती/करता है।
- दूसरों की बातों को सुनकर अपनी बात कहने की कोशिश करती/करता है।
- अपनी, अपने परिवार, परिवेश की बात को कहने में दिलचस्पी दिखाती/दिखाता है। जैसे-मेरी बहन का नाम भी सबीना है।
- अपने घर और परिवेश की चीज़ों से जोड़कर चित्रों और रचनाओं पर अनुमान लगाने की कोशिश करती/करता है। जैसे-ये तो मेरे घर के सामने वाले नीम के पेड़ जैसा है।
- हिंदी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में कहने की कोशिश करती/करता है।
- अपने आस-पास नज़र आने वाली प्रिंट सामग्री पर ध्यान देकर उस पर सवाल करती/करता है। जैसे-पेंसिल पर दोनों किनारों पर ये बच्चे कैसे बैठ गए?
- सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, आदि के बारे में बातचीत करने में रुचि प्रदर्शित करती/करता है।
- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी भाषा में कहने की कोशिश करता है।
- आस-पास मौजूद परिस्थितियों के बारे में बातचीत करती/करता है। जैसे-सूरज कहाँ चला जाता है?

पढ़ना और लिखना

- पढ़ने के प्रति इच्छुक रहता/रहती है।
- रचनाओं को आनंद लेकर पढ़ती/पढ़ता है।
- पढ़ते समय चित्र के आधार पर अर्थ का अनुमान लगाने की कोशिश करती/करता है। जैसे- हाथी बहुत खुश है और शेर को गुस्सा आ रहा है।
- अपनी पाठ्य-पुस्तक से इतर सामग्री (पोस्टर, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को पढ़ने की कोशिश करती/करता है। जैसे- फिरकी, (बाल पत्रिका फिरकी बच्चों की)
- पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनते हैं। जैसे- अरे, मेरी लालू पीलू वाली किताब कहाँ है? मैं तो वही पढ़ूँगी।
- कविता या कहानी पढ़कर उसके बारे में पूछे गए प्रश्नों का मौखिक जवाब देते हैं।

कक्षा दो

सुनना और बोलना

- दूसरों की बातों को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती/करता है। उदाहरण के लिए रोज़मर्रा

की घर, खान-पान, खेलकूद, स्कूल और साथियों की बातें, जैसे- मेरी मम्मी भी मेरे लिए नया लंच बॉक्स लाई, मेरे घर भी कबूतर ने बच्चे दिए आदि।

- अपनी भाषा में अपने परिवार और परिवेश की बात को कहता है।
- चित्रों और रचनाओं पर अनुमान लगाते हुए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती/करता है। जैसे- घोंसले में चिड़िया के बच्चे अकेले हैं। चिड़िया ज़रूर दाना लाने गई होगी।
- हिंदी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में कहता/कहती है।
- अपने आस-पास नज़र जाने वाली प्रिंट सामग्री पर ध्यान देकर उस पर सवाल करते हैं। जैसे-इस पत्ते का रंग लाल क्यों है?
- सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, आदि के बारे में बातचीत करती/करता है। जैसे- भालू ने खेली फुटबॉल कहानी में जब भालू के बच्चे ने किक लगाई तो बड़ा मज़ा आया।
- अपने मन से कहानी/कविता आदि बनाने का प्रयास करता/करती है। जैसे- आज परी के पापा आए, साथ में वो गुब्बारे लाए।
- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हैं।

पढ़ना और लिखना

- रचनाओं को आनंद लेकर पढ़ती/पढ़ता है।
- चित्र और संदर्भ के आधार पर अर्थ का अनुमान लगाती/लगाता है। जैसे- अब वह लड़की ज़रूर फिर से स्कूल जाना शुरू करेगी।
- अपनी पाठ्य-पुस्तक से इतर सामग्री (पोस्टर्स, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को पढ़कर समझती/समझता है।
- देखी/पढ़ी लिखी सामग्री पर बातचीत करता/करती है/ जैसे- ऊँट चला भई ऊँट चला कविता खुब अच्छी है। ऊँट का चित्र भी देखो कितना सुंदर है।
- पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ती/पढ़ता है।
- पढ़ी गई कविता या कहानी के बारे में पूछे गए प्रश्नों का मौखिक जवाब देते हैं।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं, कविता, कहानी को आगे बढ़ाने की कोशिश करते हैं।
- अपनी बात/कविता/कहानी को सृजनात्मक तरीके से लिखता है।

कक्षा तीन

सुनना और बोलना

- सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत/सवाल पूछती/पूछता है। जैसे- इस चित्र में मछली उड़ क्यों रही है?
- सुनी गई ऑडियो-वीडियो सामग्री पर बातचीत करता है। जैसे- बूढ़ी अम्मा ने झाड़ू मारा तो चाँद ऊपर आसमान में जाकर बैठ गया।
- अपने मन से कहानी/कविता आदि बनाने का प्रयास करता/करती है।

- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ती/जोड़ता है।

पढ़ना और लिखना

- रुचिकर रचनाओं को आनंद लेकर पढ़ती/पढ़ता है।
- चित्र और संदर्भ के आधार पर अर्थ का अनुमान लगाती/लगाता है।
- अलग-अलग तरह की रचनाओं को समझते हुए पढ़ने की कोशिश करती/करता है।
- अपनी पाठ्य-पुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को पढ़कर समझती/समझता है।
- देखी/पढ़ी लिखती सामग्री पर अपनी राय देती/देता है। जैसे- मुझे यह कहानी अच्छी नहीं लगी।
- पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ती/पढ़ता है।
- अपने सामान्य और विशेष अनुभवों को लिखता है जैसे- घर से स्कूल के रास्ते में क्या-क्या देखा?, गर्मी की छुटियों में क्या किया? आदि।
- कविता या कहानी पढ़कर उसके बारे में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर लिखना।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं, कविता, कहानी को आगे बढ़ाते हैं। जैसे- मन करता है कोयल बनकर कुहू-कुहू मैं भी गाऊँ।
- आस-पास मौजूद परिस्थितियों के बारे में सवाल करती/करता है। जैसे- मेरे घर के पास कूड़ा क्यों है?
- पाठ्य-पुस्तक के विभिन्न पाठों में आए संवेदनशील मुद्दों पर अभिव्यक्ति (मौखिक, लिखित और सांकेतिक) करता/करती है।
- अपनी बात/कविता/कहानी को सृजनात्मक तरीके से लिखते हैं।

परिवेशीय सजगता

- अपने आस-पास होने वाली घटनाओं के प्रति जिज्ञासा को लिखने की कोशिश करती/करता है। जैसे- कोहरे का बादल आ गया।
- पाठ्यपुस्तक में और कक्षा में विभिन्न गतिविधियों/बातचीत के दौरान अवसर मिलने पर अपने घर की बोली में अपनी बात कहता/कहती है। जैसे- 'मम्मी कै रई कि वाके झौरे मत बैठियो।' (ब्रज भाषा)
- विभिन्न प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील मुद्दों पर अवसर मिलने पर बातचीत करता/करती है। जैसे- बाढ़ आने से हमारे मोहल्ले में भी पानी भर गया है।

भाषा – हिंदी (कक्षा चार और पाँच)

पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ

सुनना और बोलना

- दूसरों की बातों को ध्यान और धैर्य से सुनना।
- अपनी बात आत्मविश्वास से कहना।
- दूसरों की बात समझकर अपने शब्दों में कह पाना।
- कहानी, कविता आदि सहज रचनाओं को ध्यान और धैर्य से सुनना और सुनाना।
- स्वतंत्र एवं सृजनात्मक रूप से अभिव्यक्त करना।

पढ़ना और लिखना

- लिखित और मुद्रित सामग्री को पढ़कर समझना।
- दूसरों की बात पढ़कर, समझकर अपने शब्दों में कहना।
- पुस्तकालय आदि विभिन्न स्रोतों से अपनी पसंद की किताबें पढ़ना।
- नए शब्दों को शब्दकोश में देखना।
- अपनी बात और अपने भाव को अपनी भाषा में लिखकर कहना।
- पढ़ी, सुनी, देखी रचनाओं/घटनाओं पर मौखिक और लिखित रूप से अपनी राय व्यक्त करना।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि लिखना।

परिवेशीय सजगता

- प्राकृतिक और अन्य घटनाओं का अवलोकन कर अपनी राय बनाना।
- अपने भाषायी परिवेश के प्रति सजग और संवेदनशील होना।

सीखने के तरीके तथा माहौल सभी बच्चों के समावेश (inclusion) को ध्यान में रखकर।

- अपनी बात कहने (भाषिक और सांकेतिक माध्यम से) के लिए प्रोत्साहित हों।
- अपनी भाषा में बातचीत करने की आज़ादी और अवसर हों, जैसे – समूह में एक-दूसरे के बारे में दो-बातें कहना और सुनना।
- प्रयोग की जाने वाली भाषा पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ने और उसके इस्तेमाल के अवसर हों।
- अलग-अलग तरह की कहानियों, कविताओं अथवा अन्य रचनाओं की किताबें/बाल साहित्य, स्तरानुसार सामग्री, साइनबोर्ड, होर्डिंग, अखबारों की कतरनें उनके आस-पास के परिवेश में उपलब्ध हों और उन पर चर्चा करने के मौके हों।
- सक्रिय होकर काम करने के लिए स्तरानुसार ऑडियो-वीडियो सामग्री के उपयोग के अवसर हों।
- हिंदी में सुनी-पढ़ी सामग्री के बारे में अपनी भाषा में सवाल पूछने के अवसर हों।
- सुनी, देखी और पढ़ी गई ऑडियो-वीडियो सामग्री पर चर्चा करता/करती हो।
- सुनी और देखी गई बातों को स्वतंत्र और सृजनात्मक तरीके से अभिव्यक्त करने के अवसर हों।
- विभिन्न प्रकार की सामग्री पढ़ने के अवसर व्यक्तिगत रूप से, जोड़े में तथा समूह में हों।
- स्तरानुसार रोचक बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, अखबार, ऑडियो-वीडियो सामग्री उपलब्ध हों। सामग्री ब्रेल में भी उपलब्ध हो, कमज़ोर दृष्टि वाले बच्चों को दृष्टिगत रखते हुए कुछ सामग्री बड़े अक्षरों में छपी हुई हो।
- पढ़ी गई रचनाओं पर बात करने, अपनी राय देने, सवाल करने अथवा प्रतिक्रिया व्यक्त करने की आज़ादी हो।
- पढ़ी गई रचनाओं पर समूह में चर्चा करते हुए उसे बार-बार लिखने के अवसर हों।
- अपनी बात को अपने अंदाज़ में लिखकर अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता हो।

- एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, उसमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से बार-बार लिखने के अवसर हों।
- अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने की स्वतंत्रता हो।
- अपनी बात को सृजनात्मक तरीके से अभिव्यक्त करने की आज़ादी हो।
- आस-पास घटने वाली घटनाओं पर बच्चों से बातचीत या चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।
- पाठ्य-पुस्तक और उससें इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील मुद्दों को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।
- भाषायी परिवेश पर चर्चा के अवसर हों।
- अपने मोहल्ले और स्कूल में प्रयोग हो रही तरह-तरह की बोलियों, खान-पान आदि पर ध्यान देने संबंधी गतिविधियों (जैसे- एक दूसरे की भाषा में खान-पान से जुडी शब्दावली को इकट्ठा करना और उसको प्रयोग करना) के अवसर हों।

सीखने के संकेतक

सभी बच्चों के समावेश (inclusion) को ध्यान में रखकर प्रतिक्रियाएँ , भाषिक और सांकेतिक - दोनों हो सकती हैं।

कक्षा चार

सुनना और बोलना

- दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनने में दिलचस्पी दिखाती/दिखाता है। जैसे- सिर हिलाकर समझ की अभिव्यक्ति करता है।
- दूसरों की बातों को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती/करता है। जैसे- उदित, तुम्हारी कॉपी भी तो फ़ट गई है।/ कल तो छुट्टी है, दादी के साथ पार्क में झूला झूलूँगा।
- अपनी और अपने परिवार की बात को कहने में दिलचस्पी और आत्मविश्वास दिखाती/दिखाता है। जैसे- मेरी मम्मी के पैर में चोट लग गई है।/ मेरे भाई के पास भी नए रंग हैं लेकिन वो देता नहीं है।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ता और उसका इस्तेमाल करता है।
- हिंदी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में आत्मविश्वास से कहता/कहती है।
- चित्रों और अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर अनुमान लगाते हुए रचनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती/करता है।
- अपने आस-पास नज़र आने वाली प्रिंट सामग्री पर ध्यान देते हुए उसे समझने और उस पर बातचीत करने की कोशिश करती/करता है। जैसे- पोलियो की दवा पिलाने वाले कल हमारे मोहल्ले में भी आए थे। मेरी छोटी बहन को भी दवा पिलाई थी।
- सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत/सवाल पूछती/पूछता है। जैसे- अब तक हमने जो कविताएँ पढ़ी थीं, उनमें हर पंक्ति का अंतिम शब्द मिलता-जुलता था। लेकिन 'बाघ आया उस रात' कविता अलग तरह की क्यों है?

- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ती/जोड़ता है।

कक्षा चार

पढ़ना-लिखना

- पढ़ने के प्रति उत्सुक रहता/रहती है। जैसे- 'मिठाई' कहानी तो मैं भी पढ़ूँगा।
- रचनाओं को आनंद के साथ पढ़ती/पढ़ता है। जैसे- पढ़ते समय रचना के अनुरूप भाव आ रहे हैं।
- चित्र और संदर्भ के आधार पर अर्थ का अनुमान लगाती/लगाता है।
- विभिन्न प्रकार की (हास्य, साहसिक आदि) कहानियों, कविताओं आदि रचनाओं को समझते हुए पढ़ती/पढ़ता है।
- पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ती/पढ़ता है।
- अपनी पाठ्य-पुस्तक से इतर सामग्री (बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को पढ़कर समझती/समझता है।
- लिखते समय अपनी ओर से कुछ नए शब्द गढ़ने का प्रयास करती/करता है।
- विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन पर लगाई जाने वाली सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट आदि) के अनुसार लिखती/लिखता है।
- व्यक्तिगत, कक्षा या विद्यालय के स्तर पर अपनी बाल पत्रिका, बाल समाचार पत्र तैयार करती/करता है।
- अपनी पसंद के चित्रों, कहानियों, कविताओं (परिवेश से जुड़ी) आदि की कतरनों को चिपकाकर स्क्रैप बुक तैयार करती/करता है।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं, कविता, कहानी को आगे बढ़ाती/बढ़ाता है।

कक्षा चार

परिवेशीय सजगता

- अपने आस-पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता/करती है।
- आस-पास मौजूद परिस्थितियों के बारे में सवाल करती/करता है।
- पाठ्य-पुस्तक के विभिन्न पाठों में आए संवेदनशील मुद्दों पर अभिव्यक्त (मौखिक, लिखित और सांकेतिक) करता/करती है।
- पाठ्य-पुस्तक से इतर सामग्री में पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों, भिन्न रूप से सक्षम व्यक्तियों आदि से संबंधित रचनाओं को पढ़कर इनके प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का भाव अभिव्यक्त (मौखिक, लिखित और सांकेतिक) करती/करता है। जैसे- 'सुनीता की पहिया कुर्सी' कहानी को पढ़ने के बाद टिप्पणी- सुनीता जैसी कोई लड़की हमारे विद्यालय में हो तो उसे सीढ़ियाँ चढ़ने में कितनी दिक्कत होगी!
- आसपास मौजूद पेड़-पौधों, पशु-पक्षी आदि की देखभाल के प्रति सजग है। जैसे- दवा लगाने से कुत्ते के पंजे का घाव ठीक हो रहा है।

- घर, कक्षा, विद्यालय एवं आस-पास होने वाले चीज़ों के व्यर्थ इस्तेमाल को रोकते हैं। जैसे- रेखा, नल बंद कर दो। पानी बेकार बह रहा है।

कक्षा पाँच

सुनना और बोलना

- दूसरों द्वारा कही जा रही बात को धैर्य तथा ध्यान से सुनने में दिलचस्पी दिखाती/दिखाता है। जैसे- प्रश्न करके समझने की कोशिश करता है।
- दूसरों की बातों को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया तथा अपना मत व्यक्त करती/करता है।
- अपनी, अपने परिवार और अपने परिवेश की बात को कहने में दिलचस्पी और आत्मविश्वास दिखाती/दिखाता है। जैसे- अरे! यहाँ पानी भी बोतल में बिकता है। हमारे गाँव में तो नदी है।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ता और भाषायी खेल करती/करता है। जैसे- अपने साथियों से कहता है कि जल्दी-जल्दी बोलकर दिखाओ- राजा गोपगपंगमदास।
- हिंदी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में आत्मविश्वास से कहता/कहती है।
- चित्रों और अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर अनुमान लगाते हुए रचनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती/करता है। जैसे- इस बाज़ार में आइसक्रीम भी मिलती होगी।
- अपने आस-पास नज़र आने वाली प्रिंट सामग्री पर ध्यान देते हुए उसे समझने और उस पर बातचीत करने की कोशिश करती/करता है। जैसे- बहन को पोलियो की दवा पिलाते देखकर डॉक्टर से अपने सहपाठी मनजीत (जो एक पैर से चलने में असमर्थ है) के लिए दवा माँगता है- 'इसके लिए भी दवाई दे दीजिए ना।'
- सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत/सवाल पूछती/पूछता है।
- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ती/जोड़ता है। जैसे- फिर मंगू ने रुपये वापिस कर दिए।

कक्षा पाँच

पढ़ना-लिखना

- उत्साही पाठक है। जैसे- चल अबकी बार पुस्तक मेले से मिलजुल कर किताबें खरीदें।
- रचनाओं को आनंद तथा आत्मविश्वास के साथ पढ़ती/पढ़ता है। जैसे- पढ़ने के अपने अनुभवों को साथियों के साथ बाँटता है।
- चित्र और संदर्भ के आधार पर अर्थ का अनुमान लगाने के साथ ही काल्पनिक पात्रों को भी जोड़ता/जोड़ती है।
- विभिन्न प्रकार की (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि) कहानियों, कविताओं आदि रचनाओं को समझते उन पर पर स्वतंत्र टिप्पणी (reflection) देती/देता है।
- पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ती/पढ़ता है।
- विभिन्न उद्देश्यों (सूचना, जानकारी आदि प्राप्त करने के लिए) के लिए पढ़ती/पढ़ता है।

- अपनी पाठ्य-पुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को पढ़कर समझती/समझता है।
- अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजती/खोजता है।
- सुनी, देखी गई बातों को अपने शब्दों में लिखकर अभिव्यक्त करती/करता है।
- लिखते समय नए शब्द गढ़ने का प्रयास करती/करता है। जैसे- 'मेरे पैर में चकबक हो रही है।'
- विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन पर लगाई जाने वाली सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट आदि) के अनुसार लिखती/लिखता है।
- व्यक्तिगत, कक्षा या विद्यालय के स्तर पर अपनी बाल पत्रिका, बाल समाचार पत्र तैयार करती/करता है।
- अपनी पसंद के चित्रों, कहानियों, कविताओं (परिवेश से जुड़ी) आदि की कतरनों को चिपकाकर स्क्रैप बुक तैयार करती/करता है।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं, कविता, कहानी को आगे बढ़ाती/बढ़ाता है।

परिवेशीय सजगता

- अपने आस-पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों और उसकी अभिव्यक्ति की भाषा पर ध्यान देते हुए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता/करती है।
- आस-पास मौजूद परिस्थितियों के बारे में सवाल करती/करता है। जैसे- 'हमारे मोहल्ले में तो सब मिल-जुलकर रहते हैं। फिर शहर में दंगे क्यों हो रहे है?'
- पाठ्य-पुस्तक के विभिन्न पाठों में आए संवेदनशील मुद्दों पर अभिव्यक्ति (मौखिक, लिखित और सांकेतिक) करता/करती है।
- पाठ्य-पुस्तक से इतर सामग्री में पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों, भिन्न रूप से सक्षम व्यक्तियों आदि से संबंधित रचनाओं को पढ़कर इनके प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का भाव अभिव्यक्त (मौखिक, लिखित और सांकेतिक) व्यक्त करती/करता है। जैसे - ईदगाह कहानी पढ़ने के बाद कहती बच्ची है - 'मैं भी अपनी दादी की खाना बनाने में मदद करती हूँ।'
- घर, आसपास तथा विद्यालय परिसर में मौजूद पेड़ –पौधों, पशु-पक्षी आदि की देखभाल के प्रति सजग है। जैसे- पौधा तो हमने लगा दिया अब रोज़ इसमें पानी भी डाला करेंगे, नहीं तो पौधा सूख जाएगा।
- घर, कक्षा, विद्यालय एवं आस-पास होने वाले चीज़ों के व्यर्थ इस्तेमाल को रोकते हैं। जैसे- 'रोशनी, तुम रोज़ आधा खाना बर्बाद करती हो, ये अच्छी बात नहीं है।'

भाषा – हिंदी (कक्षा छह से आठ तक)
पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ

सुनना और बोलना

- विभिन्न परिस्थितियों में बोली जाने वाली भाषा को सुनकर समझना।

- दूसरों की बातों और विचारों को पढ़कर, सुनकर, समझकर अपने ढंग से कहना।
- अपनी बात स्पष्टता के साथ और खुलकर कहना।
- अपने आस-पास घट रही घटनाओं, समस्याओं, सामयिक मुद्दों और पढ़ी गई रचनाओं पर अपनी राय व्यक्त करना।

पढ़ना और लिखना

- विभिन्न अवसरों (स्वागत, सामाजिक समारोह और मुद्दे आदि) के लिए अपनी बात स्पष्टता के साथ लिखना।
- पुस्तकालय आदि विभिन्न स्रोतों से अपनी पसंद की किताबें पढ़ना।
- अलग-अलग अवसरों पर कही गई दूसरों की बातों और विचारों को पढ़कर, सुनकर, समझकर अपने ढंग से लिखना।
- अपने आस-पास घट रही घटनाओं, समस्याओं, सामयिक मुद्दों और रचनाओं को पढ़ना और उन पर अपनी राय व्यक्त करना।

परिवेशीय सजगता

- प्राकृतिक और अन्य घटनाओं का अवलोकन कर अपनी राय बनाना।
- अपने भाषायी परिवेश के प्रति सजग और संवेदनशील होना।
- विपरीत परिस्थितियों में भी भाषा का शांतिपूर्ण और विवेकपूर्ण ढंग से इस्तेमाल करना।
- विभिन्न परिवेश, कृषि और लोक कलाओं आदि से संबंधित भाषा का संरक्षण और विकास करना।

सीखने के तरीके तथा माहौल सभी बच्चों के समावेश (inclusion) को ध्यान में रखकर

- अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित मुद्दों और रचनाओं को सुनने और पढ़ने के अवसर हों।
- अपनी भाषा में बातचीत तथा चर्चा करने के अवसर हों।
- प्रयोग की जाने वाली भाषायी बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों।
- सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म, और अन्य ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।
- कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे – अभिनय, रोल-प्ले, कविता पाठ, कहानी सुनना-सुनाना, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा इनमें सभी की भागीदारी के अवसर हों।
- समूह में कार्य करने और एक-दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने-देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो।
- हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने (ब्रेल में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो।
- अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से लिखने के अवसर हों।
- अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों।
- अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने की स्वतंत्रता हो।

- सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म, और अन्य ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों।
- कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे – अभिनय, रोल-प्ले, कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्टलेखनके अवसर हों।
- अपने माहौल, अपने समाज के बारे में स्कूल तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों।
- प्राकृतिक, सांस्कृतिक, भाषिक, सामाजिक विविधताओं के प्रति जागरूक करने वाली चर्चाएँ हों।
- संवेदनशील मुददों पर चर्चा के अवसर हों जैसे जाति-पाति, धर्म, रीति-रिवाज़, जेंडर आदि।
- कृषि, लोक कलाओं, हस्त कलाओं, लघु उद्योगों को देखने और जानने के अवसर हों और उनसे संबंधित शब्दावली को जानने और उसके उपयोग के अवसर हों।

सीखने के संकेतक

सभी बच्चों के समावेश (inclusion) को ध्यान में रखकर प्रतिक्रियाएँ भाषिक और सांकेतिक – दोनों हो सकती हैं।

कक्षा छह

सुनना-बोलना

- कक्षा में कही जा रही बातों को धैर्य से सुनते हैं और उसे समझते हुए अपनी टिप्पणी देते हैं।
- पढ़ी, सुनी बातों पर बेझिझक बात करती/करता है। जैसे- घर और स्कूल विषय पर केंद्रित बातें।
- किसी सुनी, बोली गई कहानी अथवा अन्य रचनाओं को रोचक ढंग से आगे बढ़ाती/बढ़ता है। जैसे- 'प्रेमचंद' की कहानी 'नादान दोस्त' पर टिप्पणी- अंडों के टूटने पर चिड़िया फिर नहीं दिखाई दी और अंडों की हिफ़ाजत के लिए जंगल में चली गई।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देता/देती है। जैसे- नए शब्दों को जानने की उत्सुकता ज़ाहिर करना। पानी को छू कर पानी शब्द को जानना।
- रोज़मर्रा के जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति-विशेष पर बातचीत (जैसे- अपने आस पास की चीजों के बीच बातचीत की कल्पना-कुर्सी और मेज की बातचीत।

पढ़ना-लिखना

- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त नई रचनाओं जैसे-कहानी आदि के बारे में जानने और उन्हें पढ़ने के लिए उत्सुक है।
- अपनी पसंद की रचना को पुस्तकालय या अन्य स्थान से ढूँढ़कर पढ़ने की कोशिश करती/करता है।
- पढ़ी, सुनी बातों पर खुलकर लिखित अभिवयक्ति करती/करता है।
- जैसे- हेलेन केलर जैसे सायरा (जो आँखों से देख नहीं सकतीं) की बातों को लिख दें तो?
- दूसरों द्वारा कही जा रही बातों को धैर्य से सुनकर उसे समझते हुए अपनी राय लिखती/लिखता है।

- अपने अनुभवों, भावों (जैसे- स्कूल का पहला दिन, मित्र से पहली मुलाकात आदि) और दूसरों की राय, विचारों को लिखने की कोशिश करती/करता है।
- किसी सुनी, बोली गई कहानी अथवा अन्य रचनाओं को रोचक ढंग से आगे बढ़ाते हुए लिखती/लिखता है।
- रोज़मर्रा के जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति-विशेष (जैसे- कुर्सी और मेज़ का परस्पर संवाद) में भाषा का काल्पनिक और सृजनात्मक प्रयोग करते हुए लिखते हैं।

परिवेशीय सजगता

- आसपास की घटनाओं के प्रतिअपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती/करता है। जैसे- 'रामू काका की बेटी स्कूल क्यों नहीं जाती?'
- अपने साथियों की भाषा, खान-पान, पहनावा संबंधी जिज्ञासा को बोलकर और लिखकर व्यक्त करती/करता है।
- अपने परिवेश की समस्याओं (जैसे- बिजली बार-बार क्यों जाती है, हमारा स्कूल इतरा दूर क्यों है आदि) पर प्रश्न तथा साथियों से बातचीत करती/करता है।

कक्षा सात

सुनना-बोलना

- अपने साथियों द्वारा खेल, फिल्म आदि के संबंध में कही जा रही बातों को धैर्य से सुनते हैं और उसे समझते हुए अपनी टिप्पणी देते हैं।
- पढ़ी, सुनी बातों पर बेझिझक बात करती/करता है। जैसे- पढ़ी कहानियों के पात्रों पर बातचीत।
- किसी सुनी, बोली गई कहानी अथवा अन्य रचनाओं को रोचक ढंग से आगे बढ़ाती/बढ़ाता है। जैसे- नादान दोस्त कहानी पर- जंगल में तो पेड़ ही नहीं हैं।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देता/देती है। जैसे- वाक्य की बनावट पर सवाल करना और उसे दोहराना, छू कर पेड़ आदि वनस्पतियों को समझना- जैसे- पेड़ का तना खुरदरा है, पत्तियाँ चिकनी है।
- रेडियो, टेलीविज़न आदि की खबर को अपने शब्दों में अपने ढंग से कहते है।
- रोज़मर्रा के जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति-विशेष पर बातचीत (जैसे- प्राकृतिक तत्वों के बीच बातचीत की कल्पना- आसमान से समुद्र।

पढ़ना-लिखना

- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पाठेतर साहित्य के बारे में जानने और उन्हें पढ़ने के लिए उत्सुक है।
- अपनी पसंद की अथवा किसी सुनी हुई रचना आदि को पुस्तकालय या अन्य स्थान से ढूँढ़कर पढ़ने की कोशिश करती/करता है।
- पढ़ी, सुनी बातों पर खुलकर लिखित अभिव्यक्ति करती/करता है। जैसे- हमारा स्कूल तोत्तोचान के स्कूल जैसा क्यों नहीं है।
- दूसरों द्वारा कही जा रही बातों को धैर्य से सुनकर उसे समझते हुए अपनी राय लिखती/लिखता है।
- अपने अनुभवों, भावों (जैसे- अनूठे मित्र से पहली मुलाकात, व्हील चेयर से खेल मैदान तक

आदि) और दूसरों की राय, विचारों को लिखने की कोशिश करती/करता है।

- किसी सुनी, बोली गई कहानी अथवा अन्य रचनाओं को रोचक ढंग से आगे बढ़ाते हुए लिखती/लिखता है।
- रोज़मर्रा के जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति-विशेष (जैसे- बिजली की तार पर अटकी पतंग से संवाद) में भाषा का काल्पनिक और सृजनात्मक प्रयोग करते हुए लिखते हैं।

परिवेशीय सजगता

- प्राकृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती/करता है। जैसे- 'मेरे गाँव में बादल फ़टा उसे सिलें कैसे?'
- अपने साथियों की भाषा, खान-पान, पहनावा संबंधी जिज्ञासा को बोलकर और लिखकर व्यक्त करती/करता है।
- रीति-रिवाज़, त्योहार के प्रति सवाल करती/करता है। जैसे- दीवाली पर केक क्यों नहीं बनता?
- अपने परिवेश की समस्याओं (जैसे- बिजली बार-बार क्यों जाती है, नल में पानी गंदा और कम क्यों आता है आदि) पर प्रश्न तथा साथियों से बातचीत करती/करता है।

कक्षा आठ

सुनना-बोलना

- पर्यावरण, सामाजिक मुद्दों से संबंधित कही जा रही बातों को धैर्य से सुनते हैं और उसे समझते हुए अपनी टिप्पणी देते हैं।
- पढ़ी, सुनी बातों पर बेझिझक बात करती/करता है। जैसे- चुनावी मुद्दे और आम आदमी जैसे विषय पर बातचीत
- अपने लिखे और बोले पर दूसरों की राय, विचार और प्रतिक्रियाओं को आमंत्रित करती/करता है।
- सुनी, देखी घटनाओं, कार्यक्रमों, फिल्मों, गतिविधियों पर बातचीत करती/करता है।
- किसी सुनी, बोली गई कहानी अथवा अन्य रचनाओं को रोचक ढंग से आगे बढ़ाती/बढ़ाता है। जैसे- नादान दोस्त कहानी पर- पेड़ कट गए इसलिए अब बादल भी नहीं आते। चिड़िया कहाँ जाएगी।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देता/देती है। जैसे- कविता में वर्ण आवृत्ति, वाक्य अपने ढंग से बनाने का खेल करना, परिवेशीय आवाज़ों को सुनकर उनको नाम देना।
- अखबार, रेडियो, टेलीविज़न पर देखी सुनी खबरों की खबर को अपने शब्दों में अपने ढंग से कहते हैं।
- रोज़मर्रा के जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति-विशेष पर बातचीत (जैसे- आज की किसी घटना पर गांधी से बातचीत, राज्य-विभाजन पर बातचीत)

पढ़ना-लिखना

- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त नई रचनाओं (अन्य भाषाओं की रचनाएँ भी) के बारे में जानने और उन्हें पढ़ने के साथ-साथ साथियों से उन पर चर्चा के लिए उत्सुक है।

- अपनी पसंद की अथवा किसी नई प्रकाशित रचना को पुस्तकालय या अन्य स्थान से ढूँढ़कर पढ़ने की कोशिश करती/करता है और उस पर लिखकर अपने विचार भी व्यक्त करता/करती है।
- रेडियो और टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों, फिल्म संबंधी समीक्षाओं, रिपोर्टों को पढ़ने के लिए उत्सुक है।
- पढ़ी, सुनी बातों पर सुनकर लिखित अभिव्यक्ति करती/करता है। जैसे- जहाँ पहिया है पाठ पढ़कर टिप्पणी- मैं लखनऊ गई थी, वहाँ पर भी सरस्वती साइकिल योजना में सभी स्कूल जाने वाली लड़कियों को साइकिल मिली है।
- दूसरों द्वारा कही जा रही बातों को धैर्य से सुनकर उसे समझते हुए अपनी राय लिखती/लिखता है।
- अपने अनुभवों, भावों (जैसे- स्कूल का पहला दिन, मित्र से पहली मुलाकात, बंद आँखों से ये दुनिया, चुनावी माहौल आदि) और दूसरों की राय, विचारों को लिखने की कोशिश करती/करता है।
- किसी सुनी, बोली गई कहानी अथवा अन्य रचनाओं को रोचक ढंग से आगे बढ़ाते हुए लिखती/लिखता है।
- रोज़मर्रा के जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति-विशेष (जैसे- चाँद पर हम) में भाषा का काल्पनिक और सृजनात्मक प्रयोग करते हुए लिखते हैं।

परिवेशीय सजगता

- प्राकृतिक एवं सामाजिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती/करता है। जैसे- 'मैं तो अपने पैरों पर खड़ी होने के बाद ही शादी करूँगी।'
- अपने साथियों की भाषा, खान-पान, पहनावा संबंधी जिज्ञासा को बोलकर और लिखकर व्यक्त करती/करता है।
- हस्तकला, वास्तुकला, खेतीबाड़ी के प्रति अपना रुझान है तथा इनमें प्रयुक्त होने वाली भाषा को जानने की उत्सुकता। जैसे- 'अरे बापू, हल इतने सारे काम कर लेता है, पर हमारे किताबों में इसके बारे में क्यों नहीं पढ़ाया जाता?'
- जाति-पाति, धर्म, रीति-रिवाज़, ज़ेंडर आदि मुद्दों के प्रति सवाल करती/करता है। जैसे - 'मीना और राजा मिड-डे मील हमारे साथ क्यों नहीं खाते?'
- अपने परिवेश की समस्याओं (जैसे- मेट्रो हमारी गली तक क्यों नहीं? आदि) पर प्रश्न तथा साथियों से बातचीत करती/करता है।

संकेतकों का उपयोग कैसे करें-कुछ सुझाव

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों तथा बच्चों को सिखाने में मदद करने वाले सभी लोगों की सुविधा के लिए ये सीखने के संकेतक विकसित किए गए हैं। सीखने-सिखाने के दौरान उनका उपयोग कैसे किया जाए? इस संबंध में कुछ सुझाव यहाँ दिए जा रहे हैं –

- भाषा-संकेतकों को ठीक ढंग से उपयोग करने के लिए शुरुआत में दिए गए- संकेतक के मायने, समावेशी कक्षा, भाषा क्यों तथा भाषा कौशलों को समझने के लिए एक प्रारंभिक पृष्ठभूमि दी गई है। उन्हें पढ़े बगैर संकेतकों को उपयोग में लाने पर आप बच्चों की प्रगति को सही ढंग से नहीं समझ सकेंगे।

- सबसे पहले राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधार पर विकसित पाठ्यक्रम में से विभिन्न कक्षाओं के लिए हिंदी शिक्षण के उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ स्तरवार दी गई हैं।
- इन पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाओं को विद्यार्थी तभी हासिल कर सकता है, जब सीखने के तरीके तथा कक्षा में अनुकूल माहौल हो। इसी को ध्यान में रखते हुए सीखने के तरीके और माहौल, पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाओं के बाद दिए गए हैं।
- यद्यपि हमारी कोशिश यह रही है कि कक्षावार संकेतकों को दिया जाए लेकिन भाषा के कक्षा में सीखने के विभिन्न चरणों को देखते हुए इस प्रकार का बारीक अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है। इस बात का प्रयास भी किया गया है कि सीखने के संकेतक बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए दिए जाएँ।
- ये संकेतक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान सतत् और समग्र आकलन में भी आपकी मदद करेंगे, क्योंकि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही बच्चे को लगातार फ़ीडबैक भी मिलता जाएगा।
- इन संकेतकों की अच्छी समझ बनाने क लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम को पढ़ना-समझना बेहद ज़रूरी है।
- यह संकेतक बच्चे की योग्यता, कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण तथा उसकी व्यक्तिगत और सामाजिक विशेषताओं से जुड़े हुए हैं। आप देखेंगे कि बच्चे की आयु तथा स्तर के अनुसार संकेतकों में भी बदलाव आता गया है।
- समोवेशी कक्षा को दृष्टिगत रखते हुए पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं, सीखने के तरीके और माहौल तथा संकेतक के विकास में सभी तरह के बच्चों को दृष्टिगत रखा गया है।
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया की शुरुआत बच्चे के पूर्व अनुभव तथा परिवेश पर आधारित हों, इसलिए बच्चों को घर की बोली में बात करने के अवसर देने पर विशेष बल दिया गया है।

❑❑❑